रात का गीत (1 मई)

1 कुरिन्थियों 2:2 क्योंकि मैं ने यह ठान लिया था कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह, वरन क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूं।

हम आपसे विनती करते हैं, भाइयों, कि जैसे- जैसे आप अपने सामने सुसमाचार के युग में रखी गई इस महिमा वाली आशा को महत्व देते हैं, तब आप भरमाने वाली आत्मा और शैतानों के उपदेशों पर बिलकुल भी ध्यान न दें, जैसा की प्रेरित पौलुस 1 तीमुथियुस 4:1 वचन में व्यक्त करते हैं -- "परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है कि आने वाले समयों में कितने लोग भरमानेवाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएंगे"। लेकिन उस उद्देश्य की निश्चितता के साथ, आप अपने इस ऊपरी बुलावे के प्रति गम्भीर हों और उस एक उद्देश्य को अपने ऊपर लागू करें जिसके लिये आपको बुलाया गया है और शाही याजक के संभावित सदस्य होने के नाते इस कार्य को करने का विशेषाधिकार आपको मिला है। आइये हम भी ये नहीं भूलें की हम "विचित्र लोग" हैं, नाम के लिए मसीहियों से जिसकी संख्या बहुत है, उनसे अलग हैं, साथ ही साथ दुनिया से भी अलग हैं। हमारे पास ऊंची आशाएँ, ऊँचे लक्ष्य और ऊँची महत्वाकांक्षायें हैं और हमको परमेश्वर की गूढ़ चीज़ों के बारे में स्पष्ट अंतर्दृष्टि है, क्योंकि हमको अपने पहले के अन्धकार में से परमेश्वर की अद्भुत ज्योति में बुलाया गया है। और इस तरह से यदि हम दुनिया और नाम के मसीहियों से अलग हैं -- जिनमें ज्यादातर दुनिया की आत्मा है, क्या आश्चर्य है कि, यदि हम उन सबों को हमारे साथ तालमेल में नहीं पाते हैं, और या तो वे हमको नज़र अन्दाज़ करते हैं या हमारा विरोध करते हैं! `Z'16-307` R5970:1 (Hymn 313) आमीन

रात का गीत (2 मई)

यूहन्ना 6:37 वह जो मेरे पास आएगा, उसे मैं कभी न निकालूंगा।

जैसे ही समय की सीमा समाप्त हो गई, परमेश्वर ने कुरनेलियुस को, जो की एक श्रद्धावान और पवित्र और उदार व्यक्ति था, सुसमाचार का संदेश भेजकर, अन्यजातियों की ओर अपना समर्थन प्रकट किया। तब से परमेश्वर का समर्थन उतना ही अन्यजातियों के लिए खुल गया जितना की यहूदियों के लिए था - "अलग करने वाली दीवार को जो बीच में थी, ढा दिया।" अब अन्यजातियों और यहूदियों दोनों को ग्रहण करने की समान शर्तें हैं, यानि यीशु पर विश्वास और यीशु के पदचिन्हों पर चलने के लिए समर्पण। प्रेरित पौलुस ने कुलुस्सियों 1 : 23 वचन में जो कहा है कि "उस सुसमाचार का प्रचार आकाश के नीचे की सारी सृष्टि में किया गया", इस बात को हमें अन्यजातियों में सुसमाचार के प्रचार का आरम्भ होने के दृष्टिकोण से देखना है। पौलुस के कहने का मतलब यह नहीं था और न ही यह हो सकता था, की सुसमाचार का प्रचार सारी सृष्टि में किया गया का मतलब है की सुसमाचार का प्रचार सब लोगों में किया गया। क्योंकि अभी तक, 2000 वर्षों के बाद भी, सुसमाचार का प्रचार पूरी मानवजाति में नहीं हुआ है। प्रेरित पौलुस के कहने का सही मतलब उस वचन में यह था की, सुसमाचार अब अप्रतिबंधित है, आकाश के नीचे के हर प्राणी तक प्रचार होने के लिए स्वतंत्र है, चाहे उसकी राष्ट्रीयता कोई भी हो - यह अब पहले की तरह यहूदियों तक सीमित नहीं है। अब, "जिस के सुनने के कान हों," वह राज्य के सुसमाचार को "सुन ले"। अब, जो कोई भी सुनता है और परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण संदेश को स्वीकार करने का हृदय रखता है, उसे अपने शरीर को मसीह के माध्यम से परमेश्वर के लिए एक जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाना चाहिए। `Z'12-294` R5101:1 (Hymn 291) आमीन

रात का गीत (3 मई)

यहून्ना 7:16 मेरा उपदेश मेरा नहीं, परन्तु मेरे भेजनेवाले का है।

जितने भी लोग परमेश्वर के प्रतिनिधि हैं, उन सभी को अपने विचार नहीं बाटकर, केवल "परमेश्वर के वचन" ही बांटने हैं -- जैसा कि यिर्मयाह 23:28 वचन में बताया गया है -- यदि किसी भविष्यद्वक्ता ने स्वपन देखा हो, तो वह उसे बताए, परन्तु जिस किसी ने मेरा वचन सुना हो तो वह मेरा वचन सच्चाई से सुनाए। जैसा कि यशायाह 8:20 वचन में बताया गया है -- व्यवस्था और चितौनी ही की चर्चा किया करो! यदि वे लोग इस वचनों के अनुसार न बोलें तो निश्चय उनके लिये पौ न फटेगी। जैसा कि 2 तीमुथियुस 4:2 वचन में बताया गया है -- तू वचन को प्रचार कर; समय और असमय तैयार रह, और यहाँ तक कि वचन का प्रचार कर जब वह हमारे लिए सहूलियत नहीं हो। जैसा कि इब्रानियों 4:12 वचन में बताया गया है -- क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, जैसा कि यहून्ना 17:17 वचन में बताया गया है -- सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है, जैसा कि प्रेरितों 4:13 वचन में बताया गया है -- यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो अचम्भा किया; फिर उनको पहचाना, कि ये यीशु के साथ रहे हैं, इसलिए जो लोग परमेश्वर के प्रति वफादार और विश्वासी हैं और उनके वचनों के प्रति वफादार हैं, वे लोग कभी भी बेतुकी बातें और अपनी मन गढ़न्त बातें दुनिया से नहीं करेंगे, बल्कि परमेश्वर का सन्देश और प्रभु यीशु की गवाही को ही ऐलान करेंगे -- उचित समय में सुसमाचार, जो की बड़े आनन्द का है, सभी लोगों तक पहुँचाया जायेगा, परमेश्वर के निश्चित समय में। `Z'06-57` R3726:6 (Hymn 22) आमीन

रात का गीत (4 मई)

भजन संहिता 48.14 क्योंकि वह परमेश्वर सदा सर्वदा हमारा परमेश्वर है, वह मृत्यु तक हमारी अगुवाई करेगा॥

यह हमारी जिम्मेवारी है कि हम अभी के समय में सभी मामलों में परमेश्वर की देन, उनकी दिव्य देखभाल और उनके मार्गदर्शन को खोजने, ताड़नाओं, कठिनाइयों, और परिक्षाओं की गर्मी में परमेश्वर के पास शरण लें, उनसे छाया लें, और दूसरे समय में हमारी समझ को बढ़ाएं। अँधकार के मौसमों में हम तरोताजा हों और यह दिव्य मार्गदर्शन हमारे लिए ही है, जब तक हम परमेश्वर के सच्चे आत्मिक इस्राएली बनकर यरदन को पार करके स्वर्गीय कनान की ओर बढ़ रहे हैं, हमें परमेश्वर के दिव्य देखभाल, दिव्य देनों और दिव्य मार्गदर्शन और सुरक्षा की जरुरत पड़ती रहेगी। एक बार हम स्वर्गीय कनान पहुंच जाएँ, तब इनकी जरुरत नहीं। धन्य हैं वे जो परमेश्वर पर विश्वास में जागे हुए हैं और सतर्क हैं, जो परमेश्वर के समर्थन को समझ सकते हैं, जिसे अभी दुनिया नहीं समझ सकती, और जिनके दिमाग की सोच और नज़रिया सही दिशा में है। वे ही परमेश्वर के समर्थन की कदर कर सकते हैं। `Z'07-155` R3997:3 (Hymn 87) आमीन

रात का गीत (5 मई)

भजन संहिता 68:19 धन्य है प्रभु, जो प्रतिदिन हमारा बोझ उठाता है; वही हमारा उद्धारकर्ता परमेश्वर है।

हमारे परमेश्वर कितने प्यारे और संवेदनशील हैं। कितने बुद्धिमान और शक्तिशाली हैं। परमेश्वर के वादे जो उनपर भरोसा रखते हैं, उनके लिए कभी भी असफल नहीं

होते हैं। हम ये महसूस करते हैं कि, हमारे अच्छे होने के लिए किए गए प्रयत्न और अच्छा करने के लिए किए गए प्रयत्न ही अक्सर फल नहीं लाते हैं, क्योंकि हमारे बाहर का और अन्दर का विरोधी बहुत ही शक्तिशाली है। लेकिन जब हम कमजोर होते हैं, तभी हम अपनी मज़बूरी, लाचारी को महसूस कर पाते हैं, और हम कितने असक्षम हैं, यह जान पाते हैं, और तभी हम परमेश्वर में उनकी सामर्थ्य के द्वारा मजबूत होते हैं। तभी हम जान पाते हैं कि, उनकी सामर्थ्य हमारी निर्बलता में सिद्ध होती है। यह हकीकत है कि, हम कमजोर हैं, लाचार हैं, पर ये हमें परमेश्वर के प्रेम और उनकी सामर्थ्य से अलग नहीं कर सकती, जब हम उनकी मर्जी करने का पूरा प्रयत्न कर रहे होते हैं; "परमेश्वर को यह याद रहता है कि, मनुष्य तो मिटटी ही है"। `Z'15-345` R5803:2 (Hymn 185) आमीन

रात का गीत (6 मई)

भजन संहिता 116:7 हे मेरे प्राण तू अपने विश्रामस्थान में लौट आ; क्योंकि यहोवा ने तेरा उपकार किया है॥

इस परिपूर्ण शान्ति का अनुभव करने के लिए हमारे पास पिता के प्रेम पर और उनकी सदा बने रहने वाली विश्वसनीयता पर पक्का, कभी भी नहीं डगमगाने वाला विश्वास होना चाहिए। जब हम तारों से भरे हुए आसमान को देखते हैं, हम परमेश्वर की सामर्थ्य वाली शक्ति और महिमा को प्रगट रूप में अनुभव करते हैं, लेकिन हमारा मन और ह्रदय, इस से बना और टिका नहीं रहता है; हम परमेश्वर से कुछ उपहार भी पा सकते हैं, परन्तु परमेश्वर की विश्वसनीयता के ज्ञान के बिना हम नहीं जान सकते की, ये उपहार हमें चोट पहुँचाने के लिये हमारे विरोधी शैतान का जाल हैं या परमेश्वर से मिले उपहार हैं। पर यदि हमारे पास विश्वास के लिए ये उचित

नींव है, और यदि हम हमारे पिता को उनके वचनों के द्वारा जानना सिख जाते हैं (क्योंकि, यही एक मात्र तरीका है, उनको जानने का), तभी हमें पिता परमेश्वर पर दृढ़ भरोसा हो पाएगा। `Z'14-103` R5432:5 (Hymn 107) आमीन

रात का गीत (7 मई)

2 पतरस 1:16, 18 क्योंकि जब हम ने तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ का और आगमन का समाचार दिया था, तो वह चतुराई से गढ़ी हुई कहानियों का अनुकरण नहीं था वरन हम ने आप ही उसके प्रताप को देखा था। तब हम उसके साथ पवित्र पहाड़ पर थे और स्वर्ग से यही वाणी आते सुनी।

अभी के मसीही अनुभव, प्रेरितों के इस वचन के जैसे ही हो रहे हैं। जो प्रभु यीशु के प्रयत्न और उत्साह से भरे चेले हैं, वे उनके पीछे चलते हैं, उन्हें प्रभु यीशु अपने साथ रूपांतरण वाले पहाड़ पर ऊपर आने को निमंत्रण देते हैं। हमारी समझ की आँखें खोल दी जाती है। हम अद्भुत चीज़ें देखते हैं -- पुरानी बातें नयी रोशनी में और नयी बातों को दिन की रोशनी में होते देखते हैं, जैसे-जैसे वे पूरी हो रही हैं। जो मसीही चेले आगे बढ़ चुके हैं, वे अपने स्वामी की अद्भुत ज्योति, चमक के साथ देखते हैं, जैसे - जैसे वे अपने गुरु के साथ भाईचारे में नज़दीक आते हैं और पवित्र पहाड़ पर प्रभु यीशु और स्वर्गीय पिता के भी करीब आते हैं। काश, यही हमारा भी धन्य अनुभव हो! स्वर्गीय जगहों पर हम भी मसीह के साथ बैठकर, आने वाले राज्य से जुड़ी बातों की हम प्रशंशा करें, न की धरती की वस्तुओं की बातें करें। `Z'11-376` R4890:5 (Hymn 201) आमीन

रात का गीत (8 मई)

मरकुस 4:39 तब उसने उठकर आन्धी को डांटा, और पानी से कहा, “शान्त रह, थम जा!” और आन्धी थम गई और बड़ा चैन हो गया।

परमेश्वर की अनुमति से छोटी झुण्ड के सदस्यों पर, जो प्रभु यीशु के चेले हैं, बहुत सी आँधियाँ, तूफ़ान आते हैं। कभी-कभी पूरा जीवन ही तूफ़ान से भरा हुआ होता है। हम कभी गुनगुनाते हैं, "जब जीवन में, तूफान रूपी मुश्किलें हों"। प्रेरित अपनी किताबों में कहते हैं: इब्रानियों 12:7,8 वचन में -- यदि वह जिसके जीवन में ताड़ना, क्लेश, कठिनाइयां, नहीं है, तो उसके अन्दर परमेश्वर के बच्चे होने के लिए सबूत की कमी है, क्योंकि जिसके भागी सब होते हैं, तुम्हारी नहीं हुई, तो तुम पुत्र नहीं! यदि हम परमेश्वर के बच्चे हैं, तो हमारे जीवन में क्लेश और परिक्षाओं का होना जरुरी है, क्योंकि प्रेरित, कुलुस्सियों 1:12 वचन में हमें बोलते हैं -- पिता का धन्यवाद करते रहो, जिसने हमें इस योग्य बनाया कि ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मीरास में सहभागी हों। इन सभी अनुभवों में, परिक्षा का इरादा, हमें परमेश्वर के निकट लाना होता है, ताकि हमें यह महसूस हो सके कि हमें दिव्य छत्रछाया और देखभाल की जरुरत है। और इसलिए, इन तूफ़ान रूपी मुश्किलों के द्वारा निश्चय ही आशीष निकल कर आती है, चाहे सांसारिक आशीष मिले या आत्मिक आशीष। `Z'13-150` R5239:2 (Hymn 106) आमीन

रात का गीत (9 मई)

1 राजाओं **8:56** धन्य है यहोवा**,** जिसने ठीक अपने कथन के अनुसार अपनी प्रजा इस्राएल को विश्राम दिया है।

हालाँकि पूरी सृष्टि अपने पाप और दुःख के बोझ के तले दब कर कराह रही है, संतों में से कुछ लोग गा सकते हैं, आनन्दित हो सकते हैं, यहाँ तक कि जीवन के सभी दुखों के बीच में भी और तब भी जब वे पाप के परिणामों को दूसरों के साथ पूरी तरह से या यहाँ तक की दूसरों से भी अधिक बाँटते हैं। उनके आनंद का रहस्य दुगना है: (1) उन्होंने परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप का अनुभव किया है। (2) उन्होंने अपनी इच्छा को परमेश्वर की इच्छा करने के लिये पूरी तरह से समर्पित कर दिया है। उन्होंने इस नये रिश्ते को अपने उद्धारकर्ता के मार्ग पर विश्वास के द्वारा प्राप्त किया है - प्रभु यीशु के प्रायश्चित के लहू पर विश्वास के द्वारा। वे परमेश्वर के प्रति समर्पण के इस "सकेत फाटक" और "सकेत मार्ग" के द्वारा इस मार्ग में प्रवेश करते हैं - अपनी इच्छा का समर्पण करते हुए और अपनी सर्वोत्तम क्षमता के अनुसार दिव्य इच्छा को करने की वाचा बाँधते हुए। R4892:5 (Hymn 186) आमीन

रात का गीत (10 मई)

1 कुरिन्थियों 3:16 क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?

कलीसिया के संबंध में मंदिर के चित्र का उपयोग विभिन्न रूप से किया जाता है। प्रत्येक मसीही को, जब वह आत्मा से उत्पन्न हो जाता है, उसे पवित्र आत्मा का एक मन्दिर कहकर बुलाया जाता है। संतों की प्रत्येक सभा को भी परमेश्वर का

मंदिर माना जा सकता है। और जब कलीसिया के सभी सदस्य स्वर्गीय स्थिति में इकट्ठे कर लिये जायेंगे, तब वे भी परमेश्वर के मन्दिर होंगे जिसमें परमेश्वर उनमें वास करेंगे। एक दूसरे चित्र के अनुसार, प्रत्येक मसीही भविष्य के उस महान मन्दिर की तैयारी के लिए एक जीवित पत्थर है, जिसे अभी के समय में तराशा और चमकाया जा रहा है, ताकि वह इस मन्दिर में अपनी जगह के लिये तैयार हो सके। यहाँ पर विचार यह है की, जैसे पुराने समय में परमेश्वर को तम्बू में उसके अति पवित्र स्थान में शकीना की रोशनी से दर्शाया गया था, और जब यरूशलेम में परमेश्वर मन्दिर बनाया गया तब भी उनकी उपस्थिति को दर्शाया गया था, उसी प्रकार अभी के समय में परमेश्वर की आत्मा उन सबमें वास करती है, जो उनकी आत्मा से उत्पन्न हुए हैं, और आगे जाकर उन सब में परमेश्वर वास करेंगे जो आत्मा से उत्पन्न होने के अनुसार उस आत्मिक अवस्था से तालमेल रखते हुए प्रभु के प्रेम में बने हुए इस मार्ग में चलते हैं। `Z'16-14` R5831:5 (Hymn 332) आमीन

रात का गीत (11 मई)

प्रेरितों 20:35 लेने से देना धन्य है॥

हमारे प्रभु यीशु मसीह दूसरों के हित के लिए खुद से इनकार करने का सबसे महान उदाहरण हैं। वे अपने सभी महिमा और आदर के साथ आत्मिक स्वभाव में धनी थे। वे धनी होकर भी हमारे लिये कंगाल हो गये, उन्होंने मनुष्य का स्वभाव धारण किया, ताकि वे पूरी मानवजाति को छुटकारा दिला सकें। इसी के लिए उन्होंने अपना जीवन कलवारी के क्रूस पर बलिदान कर दिया, ताकि उनके बलिदान के द्वारा हम धनी हो जाएँ -- परमेश्वर के दिव्य समर्थन और दिव्य अनुग्रहों के धन को मसीह

के द्वारा पायें -- यहाँ तक की उनके साथ साँझा - वारिस हों, जो की परमेश्वर के दाहिने और जा कर उतने ऊँचे पद पर बैठ गए हैं। पर उनके साथ सांझा वारिस बनने के लिए, हमें उनके जैसा होने के लिये, वचनों की पढ़ाई करनी है, ताकि हम उनकी आत्मा को पा सकें और दूसरों के साथ वो बाँट पाएं, जो प्रभु ने हमारे साथ बाँटा है, चाहे वो सांसारिक अनुग्रह हो या आत्मिक अनुग्रह -- उदाहरण के लिये, जैसी परिस्थितियां हों उसके अनुसार, दूसरों (विशेषकर विश्वास के घराने) के साथ सांसारिक या आत्मिक रूप से भोजन या वस्त्र बाँटना। `Z'16-219` R5927:6 (Hymn 191) आमीन

रात का गीत (12 मई)

इब्रानियों 2:3 तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर कैसे बच सकते हैं? जिसकी चर्चा पहले पहल प्रभु के द्वारा हुई।

न ही सिर्फ, हमारी इस दौड़ में न कोई अनन्त जीवन था, और न ही उस अनन्त जीवन को प्राप्त करने की आशा थी, बजाये प्रभु यीशु के द्वारा, पर पूराने नियम में जीतने भी वादे किए गए थे, वे सब प्रभु यीशु के प्रायश्चित के कार्य के बिना शक्तिहीन होते, और जब तक प्रभु यीशु मनुष्य के रूप में आए नहीं, तब तक हमें यह ज्ञात नहीं हुआ था कि, हमारे लिए छुटकारा कैसे पूरा होना था। वाकई में परमेश्वर ने छाया में, विभिन्न प्रकार के प्रावधान किये थे, बहुत सारे बलिदानों के द्वारा, जो इस तथ्य का प्रमाण देता है कि, लहू बहाए बिना पाप से कोई छुटकारा नहीं मिल सकता; पर इन चीज़ों को तब तक हम नहीं समझ पाए जब तक प्रभु यीशु, असलियत में मनुष्य के रूप में नहीं आए। फिर उन्होंने जीवन और अमरता पर रोशनी डाली -- दुनिया के लिए जीवन, अनन्त जीवन जो हज़ार साल के राज्य

में, सबको मिलेगा -- अमरता उनकी कलीसिया को मिलेगी, जो उनकी दुल्हन है, परमेश्वर की छोटी झुण्ड है और प्रभु यीशु के साथ साँझा -- वारिस है। इन सब चीज़ों के बारे में पहले रोशनी नहीं मिली थी; इनको धुंधले रूप में देखा गया था और इनका अस्पष्ट रूप से वर्णन किया गया था, लेकिन ये हमारे महान शिक्षक के द्वारा, हमारे सामने उद्धार के लिए एक उदाहरण रखा, जिसको परमेश्वर ने प्रभु यीशु के द्वारा हमको दिया। परमेश्वर का धन्यवाद कीजिए कि, हम ह्रदय से होठों के द्वारा परमेश्वर की प्रशंसा ज्यादा से ज्यादा कर पा रहे हैं, जिन्होंने हमको अन्धकार में से उनकी अद्भुत ज्योति में लाया है। प्रभु यीशु पर विश्वास के द्वारा ही, हमको ये माना जाता है कि, हम जी उठकर नए जीवन की चाल चल पा रहें हैं, और प्रभु और परमेश्वर के द्वारा ही हमें उनकी सामर्थ्य के द्वारा जिलाया जायेगा, ताकि हम प्रभु यीशु जैसा हो पाएं और उनकी महिमा, आदर और अमरता में सहभागी हो पाएं। `Z'06-186` R3795:5 (Hymn 255) आमीन

रात का गीत (13 मई)

भजन संहिता 119:66 मुझे भली विवेक- शक्ति और ज्ञान दे।

प्रभु यीशु मसीह का कोई भी चेला इतने अच्छे से उन्नति नहीं कर पाया है कि, वह खुद से ये यह कह सके कि, मुझे न्याय और प्रेम के मामलों में और आदेशों की जरुरत नहीं है, पर मेरे भाई को इसकी जरुरत है। और हमारे सब अनुभवों में जो हमारा अपने भाईयों के साथ होता है, जहाँ पर हमारा भाई हमको दोषी प्रतीत होता है, तो आइये हम अपने को कहें, यहाँ मेरा भाई है जिसके पास सम्भवतः मुझसे अधिक असुविधाएँ थी। यह भी मसीह में आत्मा के अनुसार मेरा भाई है। ऐसा प्रतीत होता है कि, ये कुछ गलत कर रहा है, पर मैं इसके साथ सहानुभूति प्रकट करता हूँ,

क्योंकि सम्भवतः इसे नहीं पता है की, इसकी क्रियाएं गलत हैं। या मैं खुद भी गलत हो सकता हूँ। यदि उसने मामले को मेरे दृष्टिकोण से देखा होता, तो वह अलग तरीके से व्यवहार करता। मैं उसका न्याय नहीं करूँगा, बल्कि उसे सर्वशक्तिमान परमेश्वर के हाथों में सौंप दूँगा, जिनका न्याय अचूक है और न्याय उन्हीं का है। `Z'15-7` R5604:2 (Hymn 154) आमीन

रात का गीत (14 मई)

2 कुरिन्थियों 5:19 अर्थात परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल-मिलाप कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया, और उस ने मेल-मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है।

मसीह ने उन सभी के लिए जो सुसमाचार के युग में उनके हो जाते हैं, व्यवस्था का पालन किया और दिव्य न्याय को संतुष्ट किया; और मसीह के बलिदान का मूल्य उन सब पर डाला जाता है जिन्होनें अपने ह्रदय में व्यवस्था का पालन किया है, लेकिन शारीरिक रूप से पूरी तरह से इसका पालन अपने पाप में गिरे हुये शरीर की कमजोरियों के कारण नहीं कर पाते हैं, क्योंकि वे इस शरीर को वश में नहीं रख पाते हैं। और इसीलिये प्रेरित पौलुस कहते हैं की व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाती है। सबसे पहले, प्रभु यीशू के बलिदान का मूल्य हमारी नश्वर देहों, यानि इस शरीर पर डाला जाता है, और इस प्रकार से हमारे उद्धारकर्ता हमारी स्वभाविक अपरिपूर्णताओं को ढक देते हैं। दूसरा, क्योंकि यह देह इस प्रकार से भक्ति पूर्ण होकर, धर्मी ठहरकर, बलिदान की जाती है, इसीलिये प्रभु यीशु हमको मानवजाति के रूप में मरा हुआ मानते हैं। इसके बाद हमें एक नए आत्मिक स्वभाव में उत्पन्न किया जाता है।

इसके बाद से हमारा यह नश्वर शरीर नई सृष्टि की देह के रूप में माना जाता है, अब से मनुष्य की देह नहीं माना जाता है; क्योंकि मानवीय देह का बलिदान कर दिया गया था। वास्तव में इस देह को नई सृष्टि का दास होने के लिये जिलाया गया है। लेकिन हम वास्तव में हम अब तक मनुष्य हैं, इसीलिए इस देह को धार्मिकता की चद्दर मिलना आवश्यक है, जिसे हमको वर्तमान जीवन के अंत तक पहने रहना है। यह चद्दर हमें हमारे रक्षक प्रभु यीशु मसीह देते हैं। `Z'16-198` R5918:3 (Hymn 54) आमीन

रात का गीत (15 मई)

व्यवस्थाविवरण 5:9 मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखनेवाला ईश्वर हूं।
यदि मनुष्य परमेश्वर की तरह, इस वचन के प्रकार अपनी घृणा और जलन रखे, तब यह बिलकुल उचित होगा। हमें भी, जैसा परमेश्वर करते हैं, पाप से घृणा करनी है, लेकिन पापी से नहीं। परमेश्वर की जलन न्यायोचित है और यह निश्चित रूप से पापी के लिये उचित सजा लेकर आती है। परमेश्वर हमसे कहते हैं कि, जब हमारे पास दूसरे ईश्वर हों, तो हमें अवश्य परमेश्वर को जलन रखने वाला समझना है; लेकिन जलन तब अनुपयुक्त होता है, जब ये जलन हमारे अन्दर कड़वाहट और उसी तरह के अन्य गुणों को पैदा करे, जिसकी ओर, गिरे हुए मनुष्य का मन जाता है। जब परमेश्वर अपने आप को, एक जलन करने वाले परमेश्वर के रूप में बताते हैं, तो उनका मतलब होता है कि, वे हमें ये समझाना चाहते हैं कि, वे चाहते हैं कि हमारा पूरा प्रेम, लगाव, पूरा विश्वास, पूरा भरोसा, प्रभु यीशु के द्वारा उनपर होना चाहिए। परमेश्वर चाहते हैं कि हमारी इच्छा उनकी इच्छा के साथ पूरी तरह से मेल रखे, ताकि हमारे जीवन के सभी मामलों में उनकी इच्छा सर्वोत्तम हो। इसे

सर्वशक्तिमान परमेश्वर की ओर से स्वार्थ नहीं माना जाना चाहिए; क्योंकि यह, उनके वश में किये गए प्रावधानों के अन्तर्गत, उनके अपने प्राणियों के लिए सबसे बड़ी खुशी लाता है, वर्तमान जीवन के कर्तव्यों और मामलों में सबसे बड़ी सफलता लाता है, उन्हें उन आशीषों के लिए पूरी तरह से तैयार करता है, जिन आशीषों को परमेश्वर ने उनके लिये तैयार की है, और जिसका उन्होंने उन लोगों से वादा किया है जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं। `Z'11-93` R4789:2 (Hymn Appendix B) आमीन

रात का गीत (16 मई)

इफिसियों **4:26** सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे।

उत्तेजित होने का कारण चाहे जो भी हो, हमें यह देखना चाहिए कि मामला जल्द से जल्द सुलझ जाए। क्रोध या कोप को बनाये नहीं रखना चाहिए और न ही उसको पोषण देना चाहिए; क्योंकि ऐसा करने से एक स्थायी कड़वाहट और घृणा का पैदा होना सुनिश्चित है। क्रोध शब्द इतना मजबूत नहीं लगता जितना कि कोप या प्रचण्ड क्रोध। एक अपरिपूर्ण, पाप में गिरे हुए मनुष्य के अंदर का कोप या प्रचण्ड क्रोध, गहरा, दृढ़, और लम्बे समय से बने रहने वाला क्रोध प्रतीत होता है, जो की आक्रोशपूर्ण, प्रतिशोधी होता है। किसी की निंदा या बुराई करना एक अधिक परिष्कृत, अधिक सूक्ष्म मामला है, जो की अधिक कपटपूर्ण, अधिक दुर्भावनापूर्ण है। कई लोग चरित्र में इतने कमजोर हो जाते हैं, इतने असंतुलित हो जाते हैं, कि उन्हें

अपने दैनिक जीवन में सुनहरे नियम के उचित अनुप्रयोग का एहसास ही नहीं होता है। वे दूसरों के बारे में वैसी बातें करते हैं जिसे वे अपने बारे में सुनना पसंद नहीं करेंगे। वे दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार करते हैं जैसा बर्ताव वे खुद के लिये पसंद नहीं करेंगे। ऐसे सभी आचरणों को प्रभु के बच्चों को अपने से दूर रखना चाहिए, जिन्होंने परमेश्वर की पवित्र वाचा को अपने ऊपर ले लिया है और जो परमेश्वर के राजदूत होने का दावा करते हैं। `Z'16-312` R5974:1 (Hymn 267) आमीन

रात का गीत (17 मई)

2 कुरिन्थियों 4:18 हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं; क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं।

इस वचन का क्या मतलब है? इसका मतलब यही है की, प्रेरित पौलुस को आत्मिक दृष्टि मिली थी। उन्होंने वास्तव में धरती की लालसाओं को देखा था, पर क्योंकि उनको ये आत्मिक दृष्टि मिली थी, इसके कारण, धरती की लालसाएँ उनको अपनी ओर आकर्षित नहीं कर पाईं -- वे अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते थे। उन्होंने विश्वास की आँखों से स्वर्गीय पिता को देखा था, महिमा में पहुंचे हुए प्रभु यीशु को देखा था, स्वर्गीय स्वर्गदूतों को देखा था, परमेश्वर के आने वाले राज्य की महिमा, आदर और अमरता को देखा था। विश्वास के द्वारा ही उन्होंने, परमेश्वर के हज़ार साल वाले राज्य को अपने सामने फैलते देखा था, और दिव्य निमन्त्रण को सुना था, ताकि इस राज्य के वे वारिस हो सकें, हमारे स्वामी और उद्धारकर्ता के साथ

साँझा वारिस हो सकें। उन्होंने इस दिव्य निमन्त्रण को स्वीकार किया था। उन्होंने हमारे स्वामी के पताका के नीचे खुद को भर्ती किया था; और उन्होंने ये महसूस किया था कि, दुनिया में बाकी सभी चीज़ों का इन अनन्त चीज़ों की तुलना में वास्तव में कोई मूल्य नहीं है, जिसका परमेश्वर ने वादा किया था। उनका विश्वास परमेश्वर के वचन में था। `Z'16-266` R5951:6 (Hymn 133) आमीन

रात का गीत (18 मई)

इब्रानियों 7:25 इसी लिये जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उन का पूरा पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिये विनती करने को सर्वदा जीवित है।

पूरे सुसमाचार युग के दौरान, परमेश्वर के लोगों ने विश्वास की आँखों से महान महायाजक को अपने वकील के रूप में देखा है, जो इनके लिये विनती करने को सर्वदा जीवित है। यद्यपि प्रभु यीशु ने अपने दूसरे आगमन के लिए पिता के समय का इंतजार किया ताकि वे अपने बहुत ही बड़े और बहुमूल्य आत्मिक वादों और आशीषों को अपनी कलीसिया को दे सकें, और वादे के अनुसार संसार को सुधार से सम्बंधित आशीषें दे सकें, जिनके बारे में, "अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा जो जगत के आदि से थे", पहले से ही कहा था। लेकिन वास्तविक आशीषों के मिलने से पहले ही, विश्वास के द्वारा, वे सभी जो प्रभु यीशु के भाइयों में गिने जाते हैं, उनके चेले हैं, उनके पदचिन्हों पर चल रहे हैं, और प्रभु यीशु के सहयोग और मार्गदर्शन के द्वारा अपने बलिदान को पूरा करने की कोशिश कर रहें हैं, जैसे की प्रभु यीशु ने अपना बलिदान पूरा किया, वे सभी लोग ये महसूस करते हैं की, परमेश्वर की नज़र में वे अजनबी

और अनजान नहीं हैं, पर परमेश्वर उनको प्रत्यक्ष रूप में नहीं, बल्कि अप्रत्यक्ष रूप में, प्रभु यीशु के द्वारा स्वीकार करते हैं - जो की हमारे बिचवई हैं, हमारे वकील हैं, और केवल जिनके द्वारा ही हम पिता के सामने जा सकते हैं और उनसे उनका कोई समर्थन मांग सकते हैं या उनके समर्थन की उम्मीद कर सकते हैं। `Z'01-182` R2823:4 (Hymn 258) आमीन

रात का गीत (19 मई)

मत्ती 5:16 उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं, बड़ाई करें।
इस वचन में कुछ भी निश्चित नहीं है कि दुनिया या तो हमारे प्रभु यीशु से या उनके चेलों से मिले संदेश को ग्रहण करेगी। फिर भी, हमें अपने उजियाले को चमकने देना है, क्योंकि प्रभु यीशु ने भी अपने उजियाले को चमकने दिया था, हालांकि अन्धकार ने उसे ग्रहण न किया। ऐसा लगता है कि जबकि कुछ लोग प्रकाश का विरोध करते हैं क्योंकि उनके कर्म बुरे हैं, फिर भी कुछ अन्य लोग हैं, जिनके द्वारा इस संदेश को अलग-अलग तरीके से ग्रहण किया जाता है। इसलिए हमें "अपने उजियाले को मनुष्यों के सामने चमकने देना है ताकि वे हमारे भले कामों को देख सकें" - चाहे वे इन कार्यों को ठीक से ग्रहण करें या इनकी बुराई करें। कुछ इन कार्यों की सराहना कर सकते हैं और इन्हें देख सकते हैं। जिन लोगों ने हमारे प्रभु का विरोध किया, वे आम लोगों में से नहीं थे, बल्कि उन लोगों में से थे, जो विशेष रूप से परमेश्वर के लोग होने का दावा करते थे, सदूकी और फ़ारसी, जो अपने स्वयं के मान्यता प्राप्त मानकों

पर खरे नहीं उतर रहे थे। ये प्रभु यीशु के उपदेशों में अपने लिये फटकार महसूस किया करते थे। उन्होंने महसूस किया था कि यीशु के उपदेश उच्च कोटि के थे। `Z'11-23` R4746:3 (Hymn 45) आमीन

रात का गीत (20 मई)

कुलुस्सियों 3:9,10 तुम ने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है; और नए मनुष्यत्व को पहन लिया है जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिये नया बनता जाता है।

ज्ञान के माध्यम से, साथ ही साथ ज्ञान में, नई सृष्टि को नए सिरे से बनाया गया है या तरोताजा किया गया है, रचा गया है, मजबूत बनाया गया है। इस संसार का ज्ञान परमेश्वर के सामने मूर्खता है। पुराने मन के पास जो था वह इस संसार का ज्ञान था। नई सृष्टि जो प्राप्त करती है वह परमेश्वर का ज्ञान है। नए मन की विभिन्न शक्तियों में बढ़ोतरी होना धीरे - धीरे होनेवाला कार्य है, जो ज्ञान पर निर्भर करता है। नई इच्छा के साथ मिलकर ज्ञान ऊर्जा देनेवाली और मजबूती देनेवाली सामर्थ्य बन जाता है, और उन अवसरों को ढूँढता है जिनके द्वारा नई सृष्टि अपने उद्देश्य को पूरा कर सकती है। यह वह ज्ञान है जो ऊपर से आता है। यह ज्ञान केवल यह जानना नहीं है कि बाइबल में कितने अध्याय हैं, और न ही बाइबल में कितने वचन हैं और उन्हें बताने में सक्षम होना; बल्कि जीवन में परमेश्वर के विभिन्न प्रावधानों के द्वारा, परमेश्वर के बारे में ऐसा ज्ञान प्राप्त करना है, कि उनकी इच्छा को स्पष्ट रूप से जान पाना ही, आज्ञापालन करने के लिये पर्याप्त हो। हमारा ज्ञान

उस अनुपात में बढ़ता जाता है, जिस अनुपात में हम उन चीजों को ध्यान देते हैं जो परमेश्वर ने कही हैं; जिस अनुपात में हम ऊपर की चीज़ों पर अपना ध्यान लगाते हैं न कि धरती की चीज़ों पर। `Z'11-381` R4894:6 (Hymn 81) आमीन

रात का गीत (21 मई)

प्रेरितों 10:43 जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी॥

हमारे पापों की क्षमा के द्वारा और पापों को ढक दिये जाने के द्वारा ही हम परमेश्वर के पास जा सकते हैं; और प्रभु यीशु मसीह के बहुमूल्य लहू में विश्वास करने के अलावा कोई और माध्यम नहीं है इन पापों को ढकने का। इसलिए, उद्धार पाने के सभी सुझाव, प्रभु यीशु पर विश्वास के बिना, मूर्तिपूजक की अज्ञानता के द्वारा उद्धार पाने के सभी सुझाव, प्रभु यीशु के बारे में बीते हुए समय के सभी ज्ञान को न जानने की आवश्यकता के सभी सुझाव, सभी सुझाव कि, मसीह की धार्मिकता की आत्मा को पहचानना ही काफी है, प्रभु यीशु, जो की परमेश्वर के द्वारा नियुक्त किये गए "उस नई वाचा के बीचवई हैं", उनके बिना परमेश्वर के साथ तालमेल में आने के सभी सुझाव, ऊपर के वचनों के द्वारा पूरी तरह से निंदा प्राप्त करते हैं। परमेश्वर की पूरी योजना न केवल उनके दिव्य न्याय, ज्ञान, प्रेम और उनकी सामर्थ्य का आदर करती है, बल्कि इसी तरह से प्रभु यीशु को उसी आदर के साथ स्थापित करती है, जो पिता के पास पहुँचाने का एकमात्र मार्ग हैं। और केवल प्रभु यीशु के द्वारा ही, कोई भी अनन्त जीवन को प्राप्त कर सकता है। इन सीमाओं को देखते हुए, पवित्रशास्त्र के वचन हमें कितना आश्वासन और आराम देते

हैं, कि हमारी जाति के ज्यादातर लोगों के लिये ज्ञान का समय और इसलिए, हज़ार साल के राज्य के दौरान अनन्त जीवन के लिये परखे जाने का समय भविष्य में है।`Z'02-122` R2997:4 (Hymn 103) आमीन

रात का गीत (22 मई)

इब्रानियों 12:1 इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकने वाली वस्तु, और उलझाने वाले पाप को दूर कर के, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें।

इस दौड़ के मैदान में, सकेत मार्ग में उन्नति के सम्बन्ध में हर एक को दूसरों की जांच करने के बजाय, स्वयं की जांच करनी चाहिए; क्योंकि प्रभु को छोड़कर, किसी दूसरे की तुलना में हममें से प्रत्येक अपने स्वयं की हृदय स्थिति और अपने स्वयं के शरीर की कमजोरियों को बेहतर जानते हैं। आइये हममें से प्रत्येक यह ध्यान दें की इस दौड़ के मैदान में वो कहाँ है, इस बात से आनन्दित होते हुए की वह अभी भी दौड़ में है; इस प्रकार से बुलाये जाने को और दौड़ में प्रवेश करने के विशेषाधिकार को एक बड़ा विशेषाधिकार मानते हुए। अगर हमें पता चलता है कि हमने प्रेम के चिन्ह के पहले पड़ाव के अंक को पार कर लिया है, तो हम खुशी मनाएं और आगे बढ़ें। यदि हम पाते हैं कि हमने प्रेम के चिन्ह के दूसरे पड़ाव को भी पार कर कर चुके हैं, तो हम और अधिक आनन्दित हों, लेकिन हमारे दौड़ने में कमी न करें। यदि हम पाते हैं कि हमने तीसरे पड़ाव को पार कर लिया है तो हम ठीक से, और अधिक आनन्दित हो सकते हैं, और जोश के साथ आगे की ओर बढ़ सकते हैं; और अगर हम पूर्ण

प्रेम के चौथे निशान को प्राप्त कर चुके हैं, जिसमें दुश्मन भी शामिल हैं, तो हमारे पास वास्तव में बहुत आनन्दित होने का कारण है। इनाम हमारा है, अगर हम विश्वासी बने रहें। लेकिन, जैसा की प्रेरित कहते हैं, "परमेश्वर के सारे हथियार बांधकर - सब कुछ पूरा करके स्थिर खड़े रहो"; उन विभिन्न परीक्षाओं के सामने खड़े रहो जो चौथे पड़ाव को पार करने के बाद तुम्हें इस दौड़ और उस निशाने से दूर हटाने के लिये तुम पर आएँगी, इससे पहले की हमारे महान निरीक्षक और हमें इनाम देनेवाले हमारे प्रभु हमसे कहें, "धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।" `Z'01-10` R2755:5 (Hymn 164) आमीन

रात का गीत (23 मई)

रोमियो 4:7 धन्य वे हैं, जिन के अधर्म क्षमा हुए, और जिन के पाप ढांपे गए।

इस विषय का अध्ययन करते समय इस बात का ध्यान रखना लाभदायक होगा की चद्दर नए मन के पापों को, जैसा की कुछ लोग सोच सकते हैं, नहीं ढकती है। पवित्रशास्त्र में नए मन के लिए कोई पाप नहीं है, और न ही पाप में गिरी हुई देह के लिए धार्मिकता में परीपूर्णता है। यदि नया मन परमेश्वर के प्रति विश्वासघाती होता है, तो चद्दर उसे नहीं ढकेगी; और इस नए मन की उन्नति रूक जाएगी और इसका अंत हो जायेगा। शरीर की अपरिपूर्णताओं को (जो हमें आदम से विरासत में मिली हैं) निरन्तर ढके रखने के लिये, यह आवश्यक है की नई सृष्टि परमेश्वर के प्रति वफादार बनी रहे, नहीं तो ये दूसरी मृत्यु की हक़दार होगी। इसलिए, नए मन के नियंत्रण में अपरिपूर्ण शरीर के साथ, इन

नई सृष्टियों को शादी का जोड़ा दिया गया है, ताकि वे प्रभु और एक दूसरे की दृष्टि में खड़े हो सकें। `Z'11-189` R4842:4 (Hymn 120) आमीन

रात का गीत (24 मई)

भजन संहिता 37:23,24 मनुष्य की गति यहोवा की ओर से दृढ़ होती है, और उसके चलन से वह प्रसन्न रहता है; चाहे वह गिरे तौभी पड़ा न रह जाएगा, क्योंकि यहोवा उसका हाथ थामे रहता है।

हमारा यह वचन पहले से मान कर चल रहा है की इस वचन में जिस समूह के लोगों का वर्णन किया गया है उनकी मानवीय इच्छा का रूपांतरण हो चूका है - और यह की मनुष्य की इच्छा के बदले में दिव्य इच्छा को ग्रहण किया जा चूका है; और यह कि परमेश्वर का बच्चा धार्मिकता के तरीकों से चलना चाहता है, जिसमें चलना वह पहले ही शुरू कर चुका है; और यहाँ पर समझने के लिये उचित विचार यह होगा कि, इस प्रकार से प्रभु के मार्गों पर जो चलेगा, परमेश्वर उसके निर्णय लेने की अपरिपूर्णताओं को उसे कोई भी हानि पहुँचाने का काम करने की अनुमति नहीं देंगें, बल्कि वे आप ही उसके सब मामलों की निगरानी करेंगे; परमेश्वर उसके द्वारा लिये गए हर एक कदम को अपने वश में कर लेंगें, चाहे उसने अपनी इच्छा से, अपनी पसंद से - अपनी समर्पित इच्छा से लिया हो, लेकिन फिर भी उसे परमेश्वर उसकी भलाई के लिये, मसीह में नई सृष्टि के रूप में उसकी बढ़ोतरी के लिये, अपने वश में कर लेंगे। यदि वह निर्णय लेने में गलती करेगा, और अपने ऊपर उस गलती के प्रभाव को लायेगा, तो प्रभु की बुद्धि और शक्ति ऐसी है कि वह अपने वादों के सभी प्रावधानों को पूरा कर सकते हैं, और यहाँ तक की हमारी बड़ी भूल और कमजोरियों को भी हमारे चरित्र को मजबूत करने में और हमें धार्मिकता में स्थापित करने में काम में ला सकते हैं, और इनके द्वारा और अन्य अनुभवों के द्वारा हमें आत्मा के

फलों और अनुग्रहों में बढ़ा सकते हैं, जो की अंततः हमें राज्य में साँझा वारिस बनने के लिये तैयार करेगा। `Z'03-70` R3156:6 (Hymn 145) आमीन

रात का गीत (25 मई)

इफिसियों 6:10 इसलिए प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो।

यहाँ पर परमेश्वर के लोगों के लिए एक उपदेश है, जो की उनके लिए हर समय और सभी परिस्थितियों और सभी अवस्थाओं में लागू होता है। और यह उपदेश पुराने नियम में सेमसन पर एक स्वभाविक मनुष्य के रूप में लागू होता था, और एक सेवक के रूप में, उसी प्रकार आज के समय में यह हमपर जो मसीह में नयी सृष्टि हैं, हम पर भी लागू होता है, हम जो हमारे पिता के पुत्र के रूप में सेवक हैं। यदि हम पीछे मुड़कर सेमसन और सभी पितरों को देखें जिनकी गिनती प्रेरितों ने भी की है, तब हम ये देखते हैं की इन पितरों के इतने मजबूत चरित्र का रहस्य, जिसके द्वारा वे सह सके और परिक्षा रूपी क्लेश पर विजय पा सके, उनका परमेश्वर और उनके वादों पर विश्वास था। और ऐसा ही हमारे साथ भी होना चाहिए। पर विश्वास और भोलेपन में अन्तर है; भोलापन हमें उत्साह की आत्मा देता है, पर धीरज से सहेगा नहीं। विश्वास परमेश्वर की सामर्थ्य है, जो हमें हर चीज़ को प्रभु यीशु मसीह के अच्छे सैनिक, सच्चाई के सैनिक, धार्मिकता के सैनिक के रूप में सहने के योग्य बनाती है, पाप और बुराई और हर प्रकार की अभक्ति के विरुद्ध लड़ाई करने के योग्य बनाती है, यहाँ तक की शैतान के हर एक छल के विरुद्ध लड़ाई करने के

योग्य बनाती है, जिस छल के द्वारा वो हमें और पूरे संसार को धोखा दे रहा है, परमेश्वर के दिव्य चरित्र को "शैतान के उपदेशों" के द्वारा गलत तरीके से पेश कर रहा है, जिसे उसने अन्धकार के युग में उनकी समझ की आँखों को अँधा करके, गलत तरीके से पेश किया था। अब प्रभु के प्रावधान के द्वारा, हमारी समझ की आँखों को प्रेरित की प्रार्थना के साथ ताल-मेल रखते हुए ज्यादा से ज्यादा खोला गया है, मैं परमेश्वर से प्रभु यीशु मसीह के द्वारा तुम्हारे लिए प्रार्थना करता हूँ, "सब पवित्र लोगों के साथ भली भांति समझने की शक्ति पाओ कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊंचाई, और गहराई कितनी है" और मसीह के प्रेम को जानो, जो सब समझ से परे है। " Z'07-343 R4089:4 (Hymn 200) आमीन

रात का गीत (26 मई)

यशायाह 33:22 प्रभु हमारा राजा है; वही हमारा उद्धार करेगा॥

इस वचन का प्रभाव परमेश्वर के लोगों के ह्रदय पर गहराई से छप जाना चाहिए। दुनिया के लोग यह कहकर रो सकते हैं, कि "हमारा दूसरा कोई राजा नहीं है", केवल सीजर हमारा राजा है। लेकिन परमेश्वर के लोग जो आत्मिक इस्राएली हैं, वे इसके विपरीत, ये महसूस करेंगे की "प्रभु हमारा राजा है"। इस आज्ञा से तालमेल रखते हुए, हमलोग धरती के राजाओं और धरती के सभी कानूनों का पालन निश्चय करेंगे, इस तरह से कि, वे हमारे दिव्य कानून के साथ कोई विरोध न करे, परन्तु सबसे ऊपर हमारा सर्वोत्तम आदर, और आज्ञापालन उसके लिए है, जिसे परमेश्वर ने हमारा राजा ठहराया है -- राजा

इम्मैनुएल (प्रभु यीशु मसीह)। यदि हमारा राजा हमारे ह्रदय में वास करे, तो उनके प्रति वफादार रहना हमारे लिए आसान होगा, हम अपने आचरण, अपनी बातों में चाहे जैसे भी हों, अपने राजा के प्रति वफादार बन पाएंगे। जहाँ यदि हम उनका इन्कार करेंगे तो वो भी हमारा इन्कार करेंगे। यदि हम इन्हें स्वीकार कर लेंगे, तो वे भी हमें पिता और उनके स्वर्गदूतों के सामने स्वीकार कर लेंगे, और हमारा उद्धार करेगा। हम जो उनकी कलीसिया हैं, हमारे द्वारा, जो की उनकी देह हैं, अपने राजा के साथ -- मिलकर, उनके वादे के अनुसार, इस धरती के सभी परिवारों को आशीष देंगे और उनके साथ मिलकर, पृथ्वी के वारिस भी होंगे। `Z'03-206` R3219:4 (Hymn 290) आमीन

रात का गीत (27 मई)

भजन संहिता 122:2 जब लोगों ने मुझ से कहा, कि हम यहोवा के भवन को चलें, तब मैं आनन्दित हुआ।

वे जो परमेश्वर के घराने के, पुत्रों के घराने के, छाया में के मन्दिर के सदस्य बनने के न्योते को अच्छे और ईमानदार ह्रदय में सुनते हैं, वे वास्तव में आनन्दित होते हैं: "क्या ही धन्य है वह समाज जो आनन्द के ललकार को पहिचानता है।" हम इस वचन को भजन संहिता लिखने वाले उसी कवि भविष्यद्वक्ता के द्वारा एक इसी वचन के समान लिखी अभिव्यक्ति के साथ जोड़ते हैं, जिसमें ये ऐलान किया गया है, "मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूंगा।" हम सांसारिक घरों में, सांसारिक मंदिरों में हमेशा के लिए बसने की आशा नहीं करते हैं, लेकिन जो लोग आत्मिक घर के, निर्माणाधीन स्वर्गीय मंदिर के जीवित पत्थर, सदस्य बन जाते हैं, वे वास्तव में यहोवा के धाम में सर्वदा वास करेंगे। उनके लिए बाहर जाने का मतलब होगा घर

का विनाश, क्योंकि वे इसके विशेष रूप से सदस्य होंगे; जैसा की प्रभु ने ऐलान किया है की वे प्रभु के घर में खम्भे होंगे, और सभी लोगों के लिये अनुग्रह और सत्य के सेवक होंगें। हजार वर्ष के युग के दौरान यह वचन दुनिया के लिए भी सच्चा होगा। तब सभी मानवजाति को आराधना में प्रभु के पास जाने के लिए, आत्मिक मन्दिर, मसीह के पास जाने के लिये, और मसीह के माध्यम से पिता के पास आने के लिए आमंत्रित किया जाएगा; और वह सब जो उस संदेशे को सुनेंगे और जो उसका पालन करेंगे, वे वास्तव में प्रसन्न होंगें, यहां तक कि यीशु के जन्म के समय स्वर्गदूतों द्वारा लाए गए संदेशे ने भी सूचित किया था कि अंततः यह बड़े आनन्द का सुसमाचार सब लोगों के लिये होगा। `Z'03-443` R3284:4 (Hymn 54) आमीन

रात का गीत (28 मई)

भजन संहिता 40:4 क्या ही धन्य है वह पुरूष, जो यहोवा पर भरोसा करता है।

यदि हम संसार को प्रभु के लोग बनने के लिए छोड़ देते हैं, और उन्हें प्रभु के हाथों से अनुभव के पाठों को प्रभु पर उचित विश्वास के साथ ग्रहण करने देते हैं, तो परिणाम, निश्चित रूप से जो कुछ भी प्रभु के पास है उसे विरासत में पाने के लिए, एक पूर्ण समर्पण करने के लिए तैयारी और तत्परता होगी, प्रभु की इच्छा करने के लिए खुद को पूर्ण रूप से समर्पित करना होगा; प्रभु के मार्गदर्शन का अनुकरण करना होगा। और यदि विश्वास उचित प्रकार का हो, तो हम भविष्यद्वक्ता के साथ कहेंगे, "मैं हानि से न डरूंगा, क्योंकि तू मेरे साथ रहता है; तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है।" इस तरह के और केवल ऐसे ही लोग, इस वर्तमान सुसमाचार

के युग में, प्रभु के मार्गदर्शन में चलाए जा सकते हैं, जिसमें हमें अवश्य विश्वास से चलना चाहिए, न की रूप को देखकर। केवल इस तरह के लोगों के पास ही वर्तमान समय में बाहर के और भीतर के विभिन्न विरोधों का सामना करते हुए आगे बढ़ने का दृढ़ भरोसा होगा। वैसे लोग अंततः हजार वर्ष के युग में दुनिया को आशीष देने के लिये परमेश्वर के प्रतिनिधि और प्रधान होंगे। आइए हम विश्वास के और भरोसे के पाठ को अच्छी तरह से सीखें, क्योंकि परमेश्वर हमें बताते हैं की वे इस गुण की सराहना करते हैं, और वह हमारे साथ केवल उसी अनुपात में व्यवहार करते हैं जिस अनुपात में हममें परमेश्वर पर भरोसे और विश्वास का गुण होता है, ठीक उसी प्रकार जैसा की अपने स्वयं के अनुभवों में हम पाते हैं कि हम उन लोगों की सहायता और उन्हें प्रोत्साहित करना अधिक पसंद करते हैं जो हम में दृढ़ भरोसा बनाये रखते हैं। `Z'02-255` R3064:4 (Hymn 174) आमीन

रात का गीत (29 मई)

रोमियो 5:20 जहां पाप बहुत हुआ, वहां अनुग्रह उस से भी कहीं अधिक हुआ।

हमारा यह वचन हमारी सभी आशाओं की कुँजी है। पाप न केवल हमारे प्रथम माता-पिता (आदम और हव्वा) के विरुद्ध बढ़ा, बल्कि उनके बाद के सभी वंशों (पूरी मानवजाति) में भी, मृत्यदंड की हद तक बढ़ता गया। लेकिन परमेश्वर का अनुग्रह उस से भी कहीं अधिक हुआ, और सबके प्रति हुआ। इस अनुग्रह के अंतर्गत परमेश्वर ने न केवल मसीह के द्वारा पूरी मानवजाति को पाप और मृत्युदंड से छुटकारा दिलाया, बल्कि ऐसा प्रबंध भी किया है कि फिर से स्थापित और परिपूर्ण की गयी मानवजाति को वह सब वापस मिलेगा जो उसने अदन की वाटिका में खो दिया था,

भरपूर और सम्पूर्ण रूप से और सर्वदा के लिये। इसके अलावा परमेश्वर का अनुग्रह इस हद तक इतना अधिक हुआ है की, परमेश्वर पापियों की दुनिया में से एक छोटी झुण्ड को परमेश्वर का वारिस और यीशु मसीह का संगी वारिस बनने के लिये निकालेंगे, जिनके स्वभाव को बदलना होगा, ताकि वे लोग, लम्बे समय तक मानवीय स्वभाव में रहने की जगह, दिव्य स्वभाव के समभागी बन जायेंगे, अपने प्रभु यीशु मसीह के साथ दिव्य महिमा और आदर और कार्यालय के भागी होंगें - सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ, और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर। ओह, ऐसी प्रेम भरी करुणा और कोमलता से भरी दया के लिये जो हमपर तब हुई जब हम पापी ही थे, और जो अब हमपर मसीह में और भी अधिक है, क्योंकि अब हमें उनके प्रिय पुत्र में स्वीकार कर लिया गया है - इसके लिये आइये प्रभु के लोग निरंतर प्रभु का धन्यवाद करते रहें, और मन से और ह्रदय से किया गया यह धन्यवाद हमारे शब्दों और आचरण में भी प्रगट हो, उन सब चीजों में प्रगट हो जो हम करें या बोलें, ताकि सब कुछ उनकी महिमा और स्तुति के लिये हो जिन्होंने हमें अंधकार से निकल कर अपनी अद्भुत ज्योति में लाया है। `Z'01-220` R2842:4 (Hymn 68) आमीन

रात का गीत (30 मई)

यूहन्ना **16:13** परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आएगा**,** तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा।

हमारे प्रभु के वादे से तालमेल रखते हुए, पवित्र आत्मा केवल समर्पण किये हुए समूह के लिये ही भेजी गयी थी, और सच्ची कलीसिया के लोगों के समूह में पवित्र आत्मा को बने रहना था, जो की "मसीह की देह" हैं, और हम, और हमारे जैसे अन्य

समर्पित लोग जो हमारे प्रभु, "देह का शिरोमणि जो की उसकी कलीसिया है," के साथ संगती और सहभागिता में आये हैं, हमलोग इस प्रकार से पवित्र आत्मा के प्रभाव में आ गए हैं, जो की हमारा उचित हिस्सा और विशेष अधिकार है। इस पवित्र आत्मा के द्वारा हमें आत्मिक स्वभाव के लिये उत्पन्न किया गया है, और इसी के द्वारा हम सभी बहुत ही बड़े और बहुमूल्य वादों के वारिस बन गये हैं, जो की "मसीह की देह" के लिये है। `Z'01-175` R2820:3 (Hymn 91) आमीन

रात का गीत (31 मई)

इब्रानियों 10:39 पर हम हटनेवाले नहीं कि नाश हो जाएं पर विश्वास करनेवाले हैं कि प्राणों को बचाएं॥

उन सभी के लिए जिन्होंने प्रभु का अनुकरण करने के लिए अपना सबकुछ त्याग दिया है, हमारा उपदेश यही है की वे पीछे मुड़कर नहीं देखें, कि हमने हमारी कल्पना के अनुसार सबसे बड़ा सौदा किया है, कि हम अपनी कल्पना के अनुसार सबसे बड़े इनाम को पाने के रास्ते पर हैं, हमारे प्रभु के साथ उनके अद्भुत कार्य में दिव्य मंजूरी के साथ सहभागी होकर। यही प्रेरित पौलुस की सोच प्रतीत होती है, जब वे हमसे विनती करते हैं की, हम हर उस सांसारिक बोझ और उलझन को अपने से दूर कर दें, ताकि यह दौड़ जो हमारे सामने है, हम हमारे प्रभु यीशु को देखते हुए, जो हमारे विश्वास के कर्ता हैं, इस दौड़ को धीरज के साथ दौड़ें, जब तक कि प्रभु यीशु इस दौड़ को पूरा न करा दें। इसलिए हमारे मसीही अनुभव की शुरुवात में, पूरी तत्परता के साथ जितना सम्भव हो सके, सभी मामलों में अपनी इच्छाओं को मेमने (प्रभु यीशु) के पीछे चलने के लिए एक ही बार में समर्पण कर दें; इसलिए आइये हम हमेशा के लिए जितना सम्भव हो सके, अपने सारे सांसारिक मामलों और हितों

का प्रबंध, दूसरों की उचित मांग के अनुसार तालमेल रखते हुए, जितनी बुद्धिमानी से हो सके करें, और आइये उसके बाद दौड़ के अंत तक विश्वासी होकर दृढ़ रहे। `Z'06-47` R3721:5 (Hymn 277) आमीन